कथा सरिता

महत्वपूर्ण सीख

कौरवों व पांडवों की शिक्षा पूर्ण हो चुकी थी। उनके गुरु द्रोणाचार्य ने सोचा कि दुर्योधन व युधिष्ठिर के चारित्रिक-विकास की स्थिति के आकलन के लिए अलग से परीक्षा ली जाए। ऐसा करने के पीछे उनका मंतव्य यह था कि आगे चलकर दोनों ही शासन के प्रमुख बनने वाले थे। अत: दोनों का उस कसौटी पर परीक्षण आवश्यक था। द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को पहले अपने पास बुलाया और कहा - जाओ, एक अच्छे व्यक्ति को तलाशकर मेरे पास लाओ। दुर्योधन के जाने के बाद उन्होंने युधिष्ठिर को बुलाकर आदेश दिया - जाओ और एक बुरे व्यक्ति को खोजकर लाओ। सायंकाल तक भटकने के बाद दोनों अकेले लौट आए। आकर दुर्योधन ने गुरुदेव से शिकायत की कि आपने कैसे व्यर्थ काम में मुझे लगा दिया? दुनिया में आखिर कोई पूरी तरह भला आदमी भी हो सकता है? मैं सवेरे से शाम तक भटकता रहा, किंतु एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला। वहीं युधिष्ठिर का कहना था - गुरुदेव, मैंने लोगों से बुरे व्यक्ति के बारे में पूछताछ की तो उन्होंने कई नाम बताए। किंतु जब मैं उनसे मिला तो देखा कि उनमें भी अनेक गुण हैं। संपूर्ण रूप से बुरा एक भी व्यक्ति नहीं मिला। अत: मैं किसी को नहीं ला सका। तब द्रोणाचार्य ने दोनों को यह जीवन दर्शन दिया कि सर्वांग, पूर्ण मात्र ईश्वर है, जबकि इंसान में अच्छाई और बुराई दोनों होती है। बस, प्रतिशत कम या अधिक हो जाता है। इसलिए अच्छाई को ग्रहण और बुराई का त्याग करने पर ही हमारा जीवन सुखमय होता है।

मनोबल

कुछ व्यक्ति एक वटवृक्ष के नीचे बैठकर चर्चा कर रहे थे। ये सभी व्यक्ति दुनिया के झंझटों से डरकर भाग आए थे। एक ने कहा - हम सब मिलकर जंगल में रहेंगे और तपस्या करेंगे। तभी दूसरे ने कहा - लेकिन, यह तो सोचो कि जब ईश्वर वरदान मांगने को कहेगा, तो मांगोगे क्या? पहले ने कहा - हमें अन्न मांगना चाहिए, क्योंकि इसके बिना जीवित नहीं रह सकते। तभी तीसरे ने कहा - बल मांगना चाहिए, क्योंकि बिना बल के कुछ नहीं कर सकते। चौथे ने कहा - बुद्धि मांगना ज्यादा उचित है। बुद्धि की आवश्यकता प्रत्येक कार्य को करने के लिए होती है। पांचवा बोला - ये सब वस्तुएं तो सांसारिक है। तब पहले व्यक्ति ने कहा - तुम सब मूर्ख हो। क्यों न स्वर्ग ही मांग लें? वहां समस्त उपलब्धियां एक साथ मिल जायेगी। यह सुनकर वटवृक्ष हंसते हुए बोला - मेरी बात मानो, तुम लोगों से न तपस्या होगी, न उपलब्धियां प्राप्त होंगी, क्योंकि यदि इतना ही मनोबल होता, तो संसार से घबराकर न भागते। भगवान के पास जाने के लिए असाधारण आत्मबल चाहिए। जीवन में चाहे ईश्वर को प्राप्त करना हो या सांसारिक सफलता प्राप्त करनी हो, इसके लिए मनुष्य में प्रबल मनोबल होना जरूरी है। बिना मनोबल के मनुष्य कुछ प्राप्त नहीं कर सकता। मनोबल ही वह कुंजी है, जो मनुष्य की कार्यकुशलता और योग्यता को निखारती है, उसे उन्नति के पथ पर ले जाती है। जिस व्यक्ति में मनोबल होता है, वही ईमानदार होता है। ईश्वर सभी को अवसर देता है, लेकिन प्रबल मनोबल वाले व्यक्ति ही उन अवसरों का उपयोग कर पाते हैं। सफलता मनोबली व्यक्ति को ही प्राप्त होती है, क्योंकि वह बड़ी से बड़ी बाधा को पार करके उस तक पहुंचता है। ऐसे व्यक्तियों को दूसरों की सहायता भी प्राप्त हो जाती है। ऐसे व्यक्तियों के आदेश का पालन करने के लिए दूसरे व्यक्ति तत्पर भी रहते हैं।

मुक्ति की प्रेरणा

राजस्थान के पर्वतीय क्षेत्र में डाकू दुर्जन सिंह का बड़ा आतंक था। एक दिन उस क्षेत्र में एक जैन मुनि धर्म प्रचार करने पहुंचे। दुर्जन सिंह ने सदाचार और अहिंसा के महत्व पर उनका प्रवचन सुना, तो उसे महसूस हुआ कि वह घोर पाप कर्म में जीवन बिता रहा है। वह मुनि श्री के पास पहुंचा और उनके चरण पकड़कर बोला, 'महाराज, मुझे शांति कैसे प्राप्त हो? लगता है कि मैं पापों के बोझ से दबा जा रहा हूँ।

संतजी ने कहा, 'मेरे साथ पहाड़ी पर घूमने चलो।' उन्होंने तीन पत्थर सिर पर रखते हुए कहा, 'इन्हें ऊपर पहुंचाना है।' पत्थर भारी थे। कुछ ऊपर चढ़ते ही वह बोला, 'महाराज, मुझसे इतना बोझ लिए नहीं चढ़ा जाता। मुनि ने कहा, 'एक पत्थर गिरा दो।' उसने एक पत्थर गिरा दिया, कुछ दूरी पार की फिर रूक कर बोला, 'महाराज, दो पत्थर लेकर नहीं चला जाता।' मुनि ने दूसरा पत्थर सिर से नीचे गिरा दिया। कुछ ऊंचाई पर चढ़ने के बाद दुर्जन बोला, 'एक पत्थर का भार भी भारी पड़ रहा है।' मुनि ने कहा, 'इसे भी नीचे गिरा दो।' अब वह मुनि के साथ आनंदपूर्वक ऊपर चढ़ता चला आया। ऊपर पहुंचकर मुनि ने उसे समझाते हुए कहा, 'जिस प्रकार पत्थरों का भार ऊंचाई पर पहुंचने में बाधा डाल रहा था, उसी तरह पापों का बोझ शांति में बाधा डालता है। जब तक तुम तमाम पाप त्याग न कर दोगे,

जीवन का सार

बहुत पहले की बात है। एक व्यक्ति मजदूरी करके अपना गुजर-बसर करता था। कभी-कभी जब मजदूरी नहीं मिलती तो उसे खाली पेट भी रहना पड़ता था। एक बार दो-तीन दिन निकल गए पर उसे कुछ भी काम नहीं मिला। भूख से उसका हाल बुरा हो रहा था। गर्मी का मौसम था और धूप बहुत तेज थी। वह अपने घर के बाहर इसी प्रतीक्षा में बैठा हुआ था कि शायद उसे कोई काम मिल जाए। तभी उसे एक व्यक्ति दिखा जिसने एक भारी संदूक उठा रखा था। उसने उस व्यक्ति से पूछा, 'क्या आपको मजदूर चाहिए?' उस व्यक्ति ने संदूक मजदूर को उठाने के लिए दे दिया। गरीबी के कारण उस मजदूर के पैरों में जूते भी नहीं थे। सड़क की जलन से बचने के लिए कभी-कभी वह किसी पेड़ की छाया में थोड़ी देर खड़ा हो जाता था। अपनी गरीबी से दु:खी हो वह मजदूर उस व्यक्ति से बोला, 'ईश्वर भी किसी-किसी के साथ कैसा अन्याय करता है। देखो न, हमें जूते पहनने लायक पैसे भी नहीं दिए। मजदूर की बात सुनकर व्यक्ति खामोश रहा। वे दोनों थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि तभी उन्हें एक ऐसा व्यक्ति दिखा जिसके पैर नहीं थे और वह जमीन पर घिसटते हुए चल रहा था। यह देखकर वह व्यक्ति मजदूर से बोला, 'तुम्हें यह दु:ख है कि तुम्हारे पास जूते नहीं हैं, परंतु इस व्यक्ति को देखो, इसके तो पैर ही नहीं हैं। तुमसे कहीं अधिक कष्ट इस समय इस व्यक्ति को हो रहा है। तुमसे भी ज्यादा दु:खी लोग इस संसार में हैं। तुम यदि अधिक मेहनत करोगे तो जूते भी ले सकते हो पर यह व्यक्ति क्या करे कि इसे पैर मिल जाएं। इसलिए हिम्मत हार कर ईश्वर को दोष देने की जरूरत नहीं। ईश्वर ने मौके सभी को बराबर दिए हैं,, कौन उसका लाभ उठा सकता है यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। उस व्यक्ति की बातों का मजदूर पर गहरा असर हुआ। वह उस दिन से अपनी कमियों को दूर कर अपनी योग्यता व मेहनत के बल पर बेहतर जीवन जीने का प्रयास करने लगा।

धृतराष्ट्र ने विदुर से पूछा - क्या कारण है कि सभी सौ वर्ष की आयु जी नहीं पाते। जरा एवं व्याधि से उससे पूर्व ही वे काल-कवलित हो जाते हैं? विदुर जी ने तब नीति का एक सूक्त कहा, जिसका भावार्थ है - अत्यंत अभिमान, अधिक बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, अपना ही अपना भरण-पोषण करने की चिंता, स्वार्थपरता और मित्रदोह - ये छह तीखी तलवारें हैं, जो देहधारियों की आयु को काटती हैं। ये ही मनुष्यों का वध करती हैं, मृत्यु नहीं। फिर वे बोले - हे राजन्! जो इन छह बातों से बचकर रहेगा, निश्चय ही वह सौ वर्ष की आयु तक जी सकेगा। कितना सही है यह आज भी द्वापर बीत जाने के 5000 वर्ष बाद भी।

महुवा। 'स्नेह-मिलन' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डे.कलेक्टर अंलाणी साथ में हैं स्वामी गोंविद प्रसाद, समसुद्दीन, ब्र.कु.शोभना।

मोहाली। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एडीशनल जिला एवं सेशन जज राजेन्द्र अग्रवाल, सतवंत कौर संधू, अर्जुन सिंह शेरगिल, फादर जोसेफ, ब्र.कु.प्रेमलता तथा अन्य।

नालागढ़। 'शिवरात्रि महोत्सव' पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए विधायक लखविन्द्र राणा, राजेन्द्र गर्ग, प्रवीन धीमान, ब्र.कु.राधा तथा अन्य।

नंदूरवार। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चौहान को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कल्पना।

नवसारी। कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् आत्म-स्मृति में खड़ें हैं एडवोकेट हेमलता, रेणुका चौकसी, लीला, ब्र.कु.भानु तथा अन्य।

पटना, अशोक नगर। 'प्लेटिनम जुबली' पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.ज्योति साथ में हैं सांसद नरेन्द्र प्रसाद।